**रविवार, दिनाँक 18-08-2024 को सत्संग में हुए वचनों का संक्षिप्त विवरण**

**महाबीर जी ने तीनों ताप मिटाये, महाबीर जी ने तीनों ताप मिटाये।।**

**रघुनाथ जी दे चरणां दे प्यारे, सारी दुनियां दे हैन सहारे।**

**सब दे कलेश हटाये, महाबीर जी ने तीनों ताप मिटाये।।**

**सुग्रीव विभीषण नू मन्त्र सिखाये, रघुनाथ जी दा जाके दर्श दिखाये।**

**जीवन मुक्त बनाये, महाबीर जी ने तीनों ताप मिटाये।।**

**लक्ष्मण नू जदों मूर्छा आवे, महाबीर जी जा के संजीवनी लियावे।**

**लक्ष्मण दे प्राण बचाये, महाबीर जी ने तीनों ताप मिटाये।।**

**तुलसीदास महाबीर जी दी शरणी आवे, महाबीर जी अपना दर्श दिखावे।**

**रघुनाथ जी नू तिलक लगाये, महाबीर जी ने तीनों ताप मिटाये।।**

**जो भैणां महाबीर जी दी शरणीं आवन, महाबीर जी अपना उपदेश बतावन।**

**भवसागर पार लगाये, महाबीर जी ने तीनों ताप मिटाये।।**

**जो महाबीर जी दा नाम ध्यावे, सोई दासी परम पद पावे।**

**रघुनाथ जी दे चरण दिखाये, महाबीर जी ने तीनों ताप मिटाये।।**

**मैं दासी तुहाडे चरणां दी प्यारी, लाज रख लौ मेरे बलधारी।**

**दासियां नू आप समझाये, चरणां विच प्रेम बढ़ाये।**

**महाबीर जी ने तीनों ताप मिटाये।।**

सजनों इस भजन द्वारा सच्चेपातशाह जी ने जो बताया है, वह सब सुनकर हमारे अन्दर भी इन तीनों तापों से मुक्ति प्राप्त करने की चाहना अवश्य पैदा होनी चाहिये। यह तीनों ताप

क्या हैं - आध्यात्मिक, आधिभौतिक एवं आधिदैविक। ये ही मानव की आत्म-विस्मृत अवस्था के कारण स्वरूप हैं। जानो जहाँ आत्म-विस्मृति होती है, वहाँ मानव के लिये स्वतन्त्रतापूर्वक कुछ भी कर पाना असम्भव होता है क्योंकि उसके अन्दर आत्म-विश्वास जाग्रत ही नहीं होता। सजनों जहाँ आत्म-विश्वास नहीं होता, वहाँ वांछित क्रिया कैसे संभव हो सकती है? इसलिए इस अवस्था में इन्सान के अन्दर संकल्प-विकल्पों की तरंगों की उथल-पुथल उत्पन्न हो जाती है। इसी मध्य कोई भी दुनियाँ में उलझाने वाला व्यक्ति उसकी मानसिक दुर्दशा भाँपकर उसे अपने में उलझा लेता है और इन्सान शनैः शनैः अपनत्व खोकर दूसरों के अधीन हो जाता है। अन्य शब्दों मे वह जैसा सबको उठते-बैठते, खाते-पीते करते समय देखता है, वैसा ही करने लग जाता है और स्वयं को बुद्धिमान समझने लगता है। यह बहुत बड़ी गलत-फहमी की स्थिति होती है जब एक बुद्धिहीन इन्सान स्वयं को सबसे बुद्धिमान समझता है और अधिकारपूर्वक अपनी बुद्धिहीनता के भाव अपने पख-परिवार तक पहुँचाता है और संगी-साथियों को मानवता से भटकने के लिए मजबूर कर देता है। सोचो, इससे बड़ा पाप क्या हो सकता है? जो अज्ञानी है वह निःसन्देह पापयुक्त कर्म करेगा ही करेगा चाहे वह कर्म किसी भी तरह का क्यों न हो। तो जानो जहाँ पाप है, वहाँ भोग भी है और ऐसा भोगी कष्ट भोगते-भोगते बहुत ही दुःखी अवस्था में चला जाता है। यह दुःख जीवन के दौरान भी प्राप्त होता है और मरणोपरान्त भी साथ ही जाता है।

इस परिप्रेक्ष्य में सजनों आप के साथ ऐसा न हो, उसके लिये सच्चेपातशाह जी बताते हैं कि जैसे सजन श्री शहनशाह हनुमान जी ने जीवन का उचित मार्ग दिखाकर हमारे तीनों ताप मिटाये, वैसे ही आप भी इन तीनों तापों से मुक्त हो सकते हो बशर्ते कि जिन वचनों द्वारा उन्होंने हमें तीनों तापों से मुक्त किया, उन शास्त्र विहित वचनो को यथा धारण करो, समझो और अपना व्यावहारिक रूप वैसा ही बनाओ। इस सन्दर्भ में हिम्मत दिखाओ, यत्न लड़ाओ और पुरुषार्थ दिखाओ। केवल सजन श्री शहनशाह हनुमान जी की युक्ति पर अटल विश्वास रखते हुए निर्भय होकर आगे बढ़ते जाओ तो आप निश्चित रूप से सफलता को प्राप्त करने वाले हो। सजनों यह सफलता आपको भवसागर से पार कराने वाली है यानि जीवन-मुक्त बनाने वाली है और जीव निश्चित रूप से अपने गन्तव्य परमधाम पहुँच विश्राम को प्राप्त करने वाला है। यह सब क्रिया किसी अन्य के हाथ में नहीं क्योंकि अगर अन्यों के हाथों चढ़ गये तो यह तीनों ताप भयंकर रूप धारणकर आपकी मानसिक स्थिति को बहुत कमजोर बना देंगे और आपको मान-अपमान, अमीरी-फकीरी में भी अन्तर का आभास न

होगा। यह दोनों ही आपको सतायेंगे, अमीरी में लोभ में फँसाकर और गरीबी में दूसरों को फलता-फूलता देखकर। इस तरह चोरी-ठगी तथा कई अधर्मयुक्त व्यवहार करने पर बाधित हो जाओगे। अतः सजनों समझदार बनो और सजन श्री शहनशाह हनुमान जी के शास्त्र-विहित हर वचन का मनन करो व समभाव-समदृष्टि होकर एकरूपता को जान जाओ। यही सफल जीवन की निशानी है। अतैव अपने पर, परिवारों पर और समाजजनों पर रहम करो और रहम खाकर उनको भी जो सद्ज्ञान यहाँ से लेकर जाते हो, उस सत्य ज्ञान को उन तक पहुँचाने में कमजोर मत पड़ो। इस क्रिया द्वारा आपकी दोहराई भी हो जाएगी और साथ ही साथ आप सचेतन अवस्था में आकर परोपकार भी कमा लोगे। अतः केवल सुनने-सुनने तक ही सीमित मत रहो अपितु क्रिया करनी आरम्भ कर दो। जो आज कहा जाये, उसे एक सप्ताह में पूर्ण करो और अगले सप्ताह आगे बढ़ जाओ। इस तरह आगे बढ़ते-बढ़ते अपने जीवन-लक्ष्य को प्राप्तकर ब्रह्म में लीन हो ब्रह्ममय हो जाओ। आप सब ऐसे समर्थ इंसान बनो हमारी तो यही शुभकामना है। इस संदर्भ में हम तो कह ही सकते हैं, हिम्मत तो आपको खुद ही करनी पड़ेगी। अब आगे सुनोः

**(सजन श्री शहनशाह हनुमान जी के मुख के शब्द)**

**देखो कलुकाल दी एहो है निशानी, देखो कलुकाल दी एहो है निशानी।**

**कलुकाल विच अन्ने बहुतेरे, कोई विरले हैन सुजाखे।।**

**अन्दर दीवा जगदा होवे, अन्नियां नूं कुझ न जापे।**

**कलुकाल बाहर मन्दिर जावन बहुतेरे, कोई विरला अन्दर देखे।।**

**वस्तु होवे घर विच प्यारे, जीव राहवे विच भुलेखे।**

**कलुकाल नाम भुल गये बहुतेरे, कोई विरले अन्दर ध्यान लगावन।।**

**रोशनी अन्दर आप दी, बाहर जंगलां नूं ढूंडन जावन।**

**कलुकाल विच सुत्ते बहुतेरे, कोई विरला अन्दर जागे।।**

**दर्शन पावन रघुनाथ जी दा, कई डेधे रहन अभागे।**

**कलुकाल विरक्त त्यागी बहुतेरे, कई विरले अन्दर त्यागी होवन।।**

**बिन सूरजों प्रकाश मन मन्दिर, ओ जन्म अपना खोवन।**

**महाबीर पूरन मिल पवन, निष्काम रस्ता ओ दिखावन।।**

**दर्शन पावन रघुनाथ जी दा, जन्म सफ़ल बनावन।**

**देखो महाबीर जी दी एहो है मेहरबानी, देखो महाबीर जी दी एहो है मेहरबानी।।**

**मेहरबानी मेहरबानी देखो महाबीर जी दी एहो है मेहरबानी।**

सजनों इस कीर्तन के अंतर्गत शास्त्र कह रहा है कि सजन श्री शहनशाह हनुमान जी मेहरबान हैं क्योंकि उनकी सद्ज्ञान रूपी मेहरबानी, कुदरती वाणी के रूप में हम तक पहुँच रही है। अतः बिना अपनी मनमत लगाये, उनकी वाणी को धारण कर यथा जीवन में उतार लो यानि अन्य संसारी प्रपंचों व बाल अवस्था के भक्ति भावों में मत उलझो। मानो बाल अवस्था के भक्तिभावों की ही यह चोट है जिन्होंने मानवजाति को त्रेतायुग से उलझाना आरम्भ कर बढ़ते-बढ़ते द्वापर, कलियुग में पूर्णतया सम्पूर्ण मानवजाति को अपने चँगुल में फँसा लिया। अब आपको उस कारावास से स्वतन्त्र होना है यानि कैद से आज़ाद होने हेतु यह अनुचित चलन त्याग देना है। याद रखो इसे यकदम छोड़ने से ही कार्यसिद्धि होगी। अतः अपने साथ संगी-साथियों को भी वैसा करने के लिये सुनिश्चित करो। ऐसा करने से आपके लिये भी युवा-अवस्था के भक्तिभाव पर स्थिर बने रहना सहज हो जायेगा क्योंकि वह परिवारजन तब आपकी ताकत बन जायेंगे। इस तरह जब आप शास्त्र के वचनों के अनुसार जीवन में आगे बढ़ रहे होंगे तो उनका भाव-परिवर्तन, उनकी ताकत आपके लिए सुखदायी व आनन्दप्रदायक हो जाएगी और आप सबके गृहस्थाश्रम शान्तमय अवस्था को प्राप्त हो जायेंगे। इस तरह जो करने आये हो वह करना आसान हो जायेगा।

सजनों जानो कि जहाँ शांति शक्ति होती है वहाँ निश्चित रूप से मानसिक स्थिरता होती ही होती है और जहाँ मानसिक स्थिरता होती है वहाँ सद्मार्ग पर दृढ़ता से चलते रहना

आसान होता है। सो जागो, गहरी निद्रा त्यागो और जागृति में आकर अपना व कुल समाज का सुधार करने का परोपकार कमाओ। कहने का तात्पर्य यह है कि अपने सजन बनो और सजनता के प्रतीक बन अन्यों के भी सजन बनो यानि 'सजन सजन दा है गहणा' इस सत्य को मानो। याद रखो जब दिनचर्या के दौरान परस्पर सजनता के भाव से विचरोगे तो एक-दूसरे को सुन्दर व प्यारे लगोगे। ऐसी स्थित में सभी नकारात्मक भाव समाप्त हो जायेंगे क्योंकि तब निन्दा-उस्तत की कोई गुँजाईश ही नहीं रहेगी। इस विषय में ज्ञात हो कि जो सजन पुरुष होता है वह परिपूर्ण होता है। अब जहाँ परिपूर्णता है वहाँ किसी भी प्रकार की कमी या कमजोरी कदापि नहीं हो सकती।

आगे फिर यह देखना है कि हमें जगत में जिस सेवा के निमित्त भेजा गया है, क्या हमने अपने जीवनकाल में उस सेवाभाव के अनुसार कोई क्रिया की है? क्या हमने अपने जीवनकाल में दुखियों की सेवा, सतवस्तु के कुदरती ग्रन्थ की वाणी को जन-जन तक पहुँचाने की सेवा की है ताकि सब उसे धारणकर ज्ञानरूप से स्वस्थ हो जायें? क्या हमने उन सेवाओं के निमित्त कुछ समय लगाया है या परिवारों में ही जकड़े पड़े हैं? जरा सोचो कि जब हमारा वह फ़र्ज अदा पूरा हो गया तो हमारा कर्त्तव्य तो यही बनता है कि यह जो सर्वोत्तम निष्काम सेवा का फ़र्ज अदा है उसमें समय लगाएँ, पर क्या इसके प्रति हमारे मन में कभी कोई इच्छा उत्पन्न हुई है? अगर उत्तर नहीं में है तो मान लो कि हम संसार में ही फँसे पड़े हैं, हम सांसारिक दुःख-सुख में ही पूरी तरह से लिप्त हैं। हमारी पहुँच का दायरा वहीं तक ही है और हम ऊपर उठने में सक्षम नहीं हो पा रहे हैं क्योंकि हमें मोहपाश ने बान्ध रखा है। जानो जब मोह बान्ध लेता है तो बहुत कठिन अवस्था उत्पन्न हो जाती है।

इस परिप्रेक्ष्य में सजनों जानो, जो बाल-अवस्था से युवा अवस्था को प्राप्त हो जाता है, वह स्वतन्त्र जीवन जीना चाहता है। परन्तु उसके युवा होने पर भी यदि हम उन के ऊपर छाये रहें तो अत्यन्त परेशानी उत्पन्न होती है। ऐसा न हो इसलिए कह रहे हैं कि समाज-सेवा के निमित्त निष्काम भाव से समय लगाओ। इस संदर्भ में हम मानते हैं कि अगर आपके अन्दर निष्काम भाव से सेवा करने का भाव उत्पन्न हुआ होता तो आप सबके सब स्वतः ही कहते कि सजन जी, हमारे गृहस्थ के फ़र्ज अदा पूरे हो चुके हैं, अब हमें वसुन्धरा में बुला लो क्योंकि हम सेवारत होना चाहते हैं ताकि हमारा जीवन पूर्णता को प्राप्त हो। अगर यह सेवा

में रत होने का भाव जाग्रत नहीं होता और मोह-माया में ही उलझने में आनन्द की अनुभूति करते हो तो समझो कि जीवन हारने पर तुले पड़े हो। सजनों जानो कि निष्कामता का भाव ही विजयी होता है। यह तो ग्रन्थ में विदित उदाहरण से भी स्पष्ट है कि कामुक भाव से तो ऋषि विश्वामित्र जी भी श्रेष्ठ पदवी पर न पहुँच पाये। उन्होंने भी जब कामुक भाव का त्यागकर निष्काम सेवा भाव अपनाया तो वह ब्रह्म ऋषि की पदवी को प्राप्त कर गये। तो आप सबको भी जिनके फ़र्ज अदा पूरे हो चुके हैं, चाहे आपके सम्पर्क में ऐसा कोई है तो उनको भी वहाँ से स्वतन्त्र होकर निष्काम सेवा पथ पर अग्रसर करना आप सबका सर्वप्रथम कर्त्तव्य है। अगर आपके अन्दर ऐसा प्रबल भाव उत्पन्न हुआ है तो मानो यहाँ वसुन्धरा पर हर प्रकार की व्यवस्था है। अतः सांसारिक मोह-माया के बन्धन से मुक्त हो ऊपर उठ जाओ।

आज आपको बता रहे हैं कि समभाव-समदृष्टि का जो कार्यक्रम हुआ उसमें आपने देखा होगा कि सतवस्तु के कुदरती ग्रन्थ का एक-एक वचन बच्चों ने खोलकर स्पष्टता से बता दिया। जो आज तक आप नहीं कर पाये, वही बच्चों ने करके दिखा दिया। तो अगर आप भी ऐसे समर्थ इंसान बनना चाहते हो तो सेवा के निमित्त अपने आप को समर्पित कर दो। इस हेतु आज की बात को औषधि समझो। इस उत्तम बात पर बारम्बार विचार करो और आज़ाद होकर निष्काम भाव से, जो भी जीवन शेष रह गया है, उसमें सेवारत हो जाओ ताकि इस जीवन के बाद कभी जन्म-मरण का समय न आये।

इस सन्दर्भ में जानो कि यह क्यों आवश्यक है? - यह सर्वविदित है कि इस सृष्टि की रचना करने वाला परमेश्वर है। यह जीवन के चार आश्रम उस रचनाकार का ही नियम है। अगर आप इन आश्रमों के अनुसार नियमबद्ध जीवनयापन करते हो तो आप ईश्वर के सुपुत्र कहलाते हुए परमपद पाने के सुपात्र हो। इस बात पर खुद गहराई से विचार करना है और अन्य सजनों को भी जैसा कि बताया गया है, वैसे का वैसा बताना है। वैसे तो आप अगर जागृति में आ जाते हो तो आपको देखकर कईयों के अन्दर उत्साह जाग्रत होगा क्योंकि यह परोपकार की बात है। इसके लिये जब आप त्याग दिखाओगे तो औरों के अन्दर भी उत्साह बनेगा। अब विचार कर लेना। सम्भव है कि इस द्वारा कोई अन्य भी अपनी किस्मत जगा ले। जो नहीं कर पायेगा तो समझो कि वह कमजोर इन्सान है और कमजोर इन्सानों

की यहाँ पर कदापि जरूरत नहीं है क्योंकि वह तो दुनियाँ में उलझा हुआ गुलाम होता है। पर यहाँ पर गुलामों की नहीं अपितु निष्काम सेवकों की आवश्यकता है जैसे कि सजन श्री शहनशाह हनुमान जी हैं। उनके पदचिन्हों पर अग्रसर होना जीवन का सर्वोत्तम परिणाम प्राप्त करने की मँगलकारी बात होती है। सो आप इस काम में सफल हों अतः इस पर पुनः पुनः विचार कर लेना और हिम्मत जुटाकर त्याग की कुर्सी पर विराजमान हो जाना।

**श्री साजन जी सब सजनों को समझौता दे रहे हैं**

**(सच्चे पातशाह जी के मुख के शब्द)**

**दोस्ती छड के ते कलुकालड़े दी, राम नाम नाल करलो प्यार सजनों।**

**राम नाम ही संग चलना जे, दोस्ती उसे दे नाल हुण लावो सजनों।।**

**कलुकाल दा पहरेवा बदल के ते, सतवस्तु नाल प्रेम बढ़ावो सजनों।**

**जैंदी प्रेम नाल प्रीत है उन्हां ताईं, उस यार नाल यारियां लावो सजनों।।**

**राजे महाराजे कम्ब के ते, कम्बे ऋषि मुनि कुल जहान सजनों।**

**कोई विरला ओ न कम्बिया जे, जेहड़े निष्काम रस्ते ते चढ़ जान सजनों।**

**कलुकालड़े दा संग छोड़ के ते, अपना आप लवो पछाण सजनों।**

**सतचित आनन्द स्वरूप आप दा, हुण इस नू लवो पछाण सजनों।।**

**पहले विशूचिका हुण सूचिका होय के ते, जन्म सफल ओ लग्गी ने बनान सजनों।**

**तुसां भुले हो इन्सान कई जन्मां दे, विचो विच न रगड़े जाओ सजनों।।**

**पंज ज्ञान इन्द्रियां, पंज कर्म इन्द्रियां जित के ते, मन जितियां जग जितिया जान सजनों।**

**जित लिया उस कुल जहान सारा, उन्हां दा दुनियां ते हो गया नाम सजनों।।**

**बाज़ी जित के ते जग सारड़े दी, जित लिया उस कुल ब्रह्माण्ड सजनों।**

**ओथे तीर तलवार दी लोड़ नाहीं, जिस शक्ति लई पछान सजनों।।**

**महाबीर जी दे वचनां ते चल के ते, अपना आप लवो पछान सजनों।**

**आप अमर इन्सान ओ अमर होवे, जेहड़ा वचन करे प्रवान सजनों।।**

सजनों कितने सुन्दर ढँग से गाया है जिसके द्वारा यत्न किया गया है कि शास्त्र की बात आपके अन्दर अपना प्रभाव छोड़े, पर इतनी मेहनत के बावजूद भी आप लाभ न उठाओ तो शर्म की बात है। सो वचनों की पालना करना हर मानव, चाहे वह सत्संगी हो या अन्य हो, उसका धर्म है। अतः इस धर्म की पालना कर अपने पख-परिवार तक उन वचनों का व्यावहारिक रूप पहुँचाना, इस तरह उनको भी अच्छा मानव बनने के लिए प्रेरित करना यही हमारा धर्म/कर्त्तव्य है। अब इस धर्म पर आप सत्यता से क्रिया करते हो या नहीं, इसके सत्य से तो आप ही परिचित हो। अगर करते हो तो यह सर्वोत्तम स्वभाव कहलाता है और अगर नहीं करते तो अपने परिवारजनों को किसी अच्छी वस्तु से वंचित यानि अपरिचित रखने की बात है जबकि माता-पिता का कर्त्तव्य बनता है कि जो भी ज्ञानरूप में अच्छा हो वह ज्ञान सबको अपनाने के प्रति युक्तिसंगत प्रेरित करें ताकि पूरे परिवारजनों को वह ज्ञान स्वाभाविक रूप से समरसता से प्राप्त हो जाये। तो जहाँ स्वाभाविक रूप समरसता को प्राप्त हो जाता है, वहाँ विकार-वृत्तियाँ छँट जाती हैं यानि निर्विकारी वातावरण बन जाता है। अब जिस किसी परिवार में भी निर्विकारिता का साम्राज्य स्थापित होता है तो वहाँ छोटा-बड़ा कोई भी  हो, एक-दूसरे की बात को समझते हुए आदर देता है। वह आदर परिवारजनों को संगठित करता है, जोड़ता है। जब परिवार जुड़कर एकता में आ जाता है और एक ही मार्ग अपना लेता है तो ताकतवर हो जाता है। उस परिवार में कोई भी अवांछित वस्तु घुस नहीं सकती जिसका मतलब है कि कोई किसी भी परिवारजन को बहला-फुसला कर आपसी फूट पैदा नहीं कर सकता। सजनों जानो कि जैसा पारिवारिक निर्माण करोगे उसी तरह से आपको सम्मान या फिर अपमान मिलेगा। अब भी जो आपको सम्मान या अपमान प्राप्त हो रहा है यह आपकी ही करनी का फल है। इस बात को समझते हुए अच्छी करनी करो।

सजनों इस कीर्तन में निष्कामता की महत्ता बताई गई है जिसके संदर्भ में समयानुकूल निष्काम सेवा का आवाहन आपको दे दिया गया है। साथ ही निष्काम सेवा की महिमा भी आप तक पहुँच गई है। यह सुनकर अब तो आपका निष्काम सेवाभाव ताकतवर हो जाना चाहिये और उस सेवा में रत होने के प्रति विलम्ब नहीं करना चाहिये। यहाँ याद रखे कि

समय सदा चलता रहता है, रुकता नहीं। समय हाथ से निकल गया तो समझो निकल गया। फिर पछताये होत क्या, जब चिड़ियाँ चुग गई खेत'। अतः समय के आवाहन को समझो और मोक्ष के अधिकारी बनो। याद रखो यह त्याग-भावना बहुत-बहुत उत्तमता को प्राप्त होने के निमित्त है अतः इस बात पर गहराई से विचार कर लेना।

**बोल सजन श्री शहनशाह महाबीर बजरंग बली जी की जय**

**बोल सजन श्री शहनशाह महाबीर बजरंग बली जी की जय**

**बोल सजन श्री शहनशाह महाबीर बजरंग बली जी की जय**

आप सभी अपने मकसद में कामयाब हों इन्हीं शुभकामनाओं सहित।